Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

साप्ताहिक

# बदर

क़ादियान

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

BADAR

Weekly Qadian

**संपादक : शेख़ मुजाहिद अहमद**

www.akhbarbadrqadian.in **E-Mail** : badarqadian@gmail.com

अंक - 1, वर्ष - 1, जुम्मेरात, 10 मार्च 2016, मूल्य - 300 रुपए वार्षिक, पृष्ठ संख्या - 8

## अख़बार-ए-अहमदिया

जमाअत अहमदिया के इमाम रूहानी ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपनी फ़जल नाज़िल फरमाए। आमीन

## पवित्र क़ुर्आन की शिक्षाएं

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, हम अवश्य उन्हें ऐसी जन्नतों में प्रविष्ट करेंगे जिनके दामन में नहरें बहती हैं। वे सदा उनमें रहने वाले हैं। यह अल्लाह का सत्य वचन है। और (अपने) कथन में अल्लाह से अधिक सत्यवादी और कौन है?। (निर्णय) न तो तुम्हारी आकांक्षाओं के अनुसार होगा और न अह्ले किताब की आकांक्षाओं के अनुसार होगा। जो भी कुकर्म करेगा उसे उसका प्रतिफल दिया जाएगा और वह अपने लिए अल्लाह को छोड़ कर न कोई मित्र पाएगा, न कोई सहायक। और पुरुषों में से अथवा स्त्रियों में से जो नेक कर्म करे और वह मोमिन हो तो यही वे लोग हैं जो स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे और उन पर खजूर की गुठली के छेद के समान भी अत्याचार नहीं किया जाएगा। और धर्म में उससे बेहतर कौन हो सकता है जो अपना सारा ध्यान अल्लाह के लिए अर्पित कर दे और वह उपकार करने वाला हो तथा उसने सत्यनिष्ठ इब्राहीम के धर्म का अनुसरण किया हो। और अल्लाह ने इब्राहीम को मित्र बना लिया था। और अल्लाह ही का है जो आसमानों में है और जो धरती में है। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु को घेरे हुए है।

(सूरः अन्निसा 123-127)

☆ ☆ ☆

## हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] की पवित्र हदीस

हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ फरमा थे कि एक आदमी आया और उस ने नमाज़ पढ़ी। फिर वह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और सलाम अर्ज़ किया। हुज़ूर ने उसके सलाम का जवाब दिया और कहा। जाओ फिर नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुम्हारी नमाज़ नहीं हुई। इसलिए वह गया और नमाज़ पढ़ी और आकर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सलाम किया। आपने उसके सलाम का जवाब दिया और कहा। जाओ फिर नमाज़ पढ़ो तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी। ऐसा तीन बार हुआ तो उस आदमी ने पूछा। इस हस्ती की कसम! जिस ने आप को सच्चाई दे कर भेजा मैं इस से अधिक बेहतर नमाज़ नहीं पढ़ सकता, इसलिए आप ही मुझे नमाज़ पढ़ने का सही ढंग बताइएं। इस पर आप ने फरमाया। जब तुम नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हो जाओ तो तकबीर कहो, फिर तौफ़ीक़ के अनुसार कुरआन पढ़ो, फिर पूरे संतोष के साथ रुकूअ करो, फिर सीधे खड़े हो जाओ, फिर पूरे संतोष के साथ सजदा करो, फिर सज से उठ कर पूरी तरह बैठो। इसके बाद दूसरा सजदा करो, इस तरह सारी नमाज़ ठहर ठहर कर संवार कर पढ़ो। (बुख़ारी किताबुल आज़ान)

☆ ☆ ☆

**हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व मेहदी मा'हूद[अलै.] की अमृत वाणी**

## हमेशा सफर धर्म की नीयत से करना चाहिए

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम फर्माते हैं :-

26 सितम्बर 1906 ई. असर के समय हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम पधारे। लोगों ने ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब की तरफ़ से सवाल किया कि दरबारे दिल्ली में शामिल होने का शौक है । यदि आज्ञा हो तो हो आऊँ। मैं तो दिल को बहुत रोकता हूँ मगर क्या करूँ फिर भी विचार हटता नहीं है। यदि आज्ञा हो तो देख आऊँ । हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़र्माया कि :-

"हो आओ क्या हरज है एक किताब में लिखा है कि जूनैद बग़दादी (रह) को एक बार ख़्याल आया के यात्रा पर जाना चाहिये फिर सोचा कि किस लिए जाऊँ तो समझ में न आया कि किस इरादे और नीयत से जाना चाहिए इसलिये फिर इरादे को छोड़ दिया यहाँ तक कि यात्रा का विचार छा गया तो इसको एक इलाही तहरीक समझ कर निकल पड़े और एक तरफ़ को चले। आगे जाकर क्या देखते हैं कि एक पेड़ के नीचे एक अपाहिज आदमी पड़ा है, उसने उनको देखते ही कहा कि हे जुनैद ! मैं कितनी देर से तेरी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। तब आप ने कहा कि वास्तव में तेरा ही खिचाँव था जो मुझे बार-बार मजबूर करता था, तो इसी तरह हर एक मामले में एक कशिश कज़ा व क़दर में मुकद्दर (निर्दिष्ट) होती है। वह पूरी न हो तो आराम नहीं आता आप सफ़र करें तो दीन की नीयत से करें दुनिया की नीयत से जो यात्रा होती है वह गुनाह होती है और इन्सान तब ही सही होता है जब हर एक बात में उसका कुछ न कुछ ध्यान दीन की तरफ़ हो हर एक मज्लिस में इस नीयत से जाएँ कि कुछ न कुछ हिस्सा दीन का प्राप्त हो। हदीस शरीफ़ में लिखा है कि एक आदमी ने मकान बनवाया आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में निवेदन यह है कि आप वहाँ पधारें तो आप के कदमों से बरकत हो जब आप[स.] वहाँ गए तो आप[स.] ने वहाँ कि खिड़की देखी पूछा कि यह क्यों रखी है ? उसने निवेदन की कि हवा ठण्डी आती है आप ने फ़रमाया कि अगर तू यह नीयत कर लेता कि हवा भी ठण्डी आती रहे और आज़ान की आवाज़ भी आती रहे तो सवाब भी मिलता रहता।

(मलफ़ूज़ात भाग 4 पृ. 306-307)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

## अनमोल वचन

**जो लोग क़ुर्आन को इज़्ज़त देंगे वे आसमान पर इज़्ज़त पाएंगे।**

## सम्पादकीय

# 40 नफली रोज़ों की तहरीक

**सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरेहिल अज़ीज़ ने ख़ुत्बा जुम्अः 7 अक्तूबर 2011 ई में जमाअत के लोगों को दुआओं के साथ नफली रोज़े रखने की हिदायत फरमाई थी। अब हुज़ूर अनवर ने अपने ख़ुत्बा जुम्अः 12 फरवरी 2016 ई में 40 नफली रोज़ों की तहरीक करते हुए फरमाया**

"जैसे बच्चे के रोए बिना माँ की छातियों में दूध नहीं उतर सकता। उसी तरह अल्लाह तआला ने भी अपने रहम को बन्दे के रोने और चिल्लाने से जोड़ दिया है। जब बंदा चिल्लाता है तो रहमत का दूध उतरना शुरू हो जाता है। इसलिए जैसा कि मैंने बताया हमें चाहिए कि अपनी ओर से बहुत कोशिश करें मगर वह कोशिश नहीं जो मुनाफिक मुराद लेते हैं और उसके बाद जिस हद तक अधिक से अधिक दुआओं को ले जा सकते हैं हमें ले जाना चाहिए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने उस वक्त भी तहरीक की थी कि सात रोज़े रखें और दुआएं करें। कुछ साल हुए मैंने भी कहा था कि जमाअत को रोज़े रखने चाहिए(ख़ुत्बाते मसरूर भाग 9 पृष्ठ 501-502) और जमाअत में अब तक कुछ ऐसे हैं जो उस पर कायम हैं,और रोज़े रखते हैं। कम से कम अब हमें चाहिए चालीस रोज़ें साप्ताहिक ही रखें। यानी चालीस सप्ताह तक खासकर के रोज़े रखें, दुआएं करें और नफिल अदा करें सदके दें। क्योंकि कई जगह जमाअत के जो हालात हैं उन में बहुत अधिक सख़्ती और तेज़ी आती जा रही है। जब हम अल्लाह तआला के हुज़ूर चिल्लाएंगे तो जिस तरह बच्चे के रोने से माँ की छातियों में दूध उतर आता है, आसमान से हमारे रब्ब की सहायता इंशा अल्लाह तआला नाज़िल होगी और वे रोकें और मुश्किलें जो हमारे रास्ते में हैं वे दूर हो जाएंगी। पहले भी दूर होती रहीं और अब भी इंशा अल्लाह तआला दूर होंगी।''

इसी तरह हुज़ूर अनवर ने ख़ास दुआओं का तरफ ध्यान दिलाते हुए फरमाया

"पाकिस्तान में तो अहमदियों के ख़िलाफ कानून भी है और कानून उन विरोधियों की मदद करता है और वे जो चाहते हैं करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में जो मुंह में आता है, जो बकवास गंदी बात कहनी होती है वे कर जाते हैं। अहमदियों को ज़ुल्म का निशाना बनाया जाता है। अदालतें जो हैं वे भी अब ज़रा-ज़रा सी बात पर सज़ा देने पर तुली हुई हैं। तो इसके लिए तो हमें बहुत अधिक ख़ुदा तआला के सम्मुख चिल्लाने की ज़रूरत है। विशेष रूप से पाकिस्तान के अहमदियों को इस ओर पहले से अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है। शुद्ध होकर अल्लाह तआला के आगे झुकें। नवाफिल अदा करें। सदके दें। रोज़ें रखें। दुआ के बिना और अल्लाह तआला की रहमत को जोश में लाए बिना हमारे लिए और कोई रास्ता नहीं है। अल्लाह तआला खासकर उन अहमदियों को जहां यह अत्याचार हो रहे हैं जिन देशों में हो रहे हैं, या जिन स्थानों पर हो रहे हैं, ऐसी दुआओं की ताकत दे जो अल्लाह तआला के अर्श को हिलाने वाली हूँ और आम तौर पर दुनिया के अहमदियों को भी जमाअत की तरक्की और ज़ुल्म से बचने के लिए दुआओं की तरफ ध्यान देना चाहिए। अल्लाह तआला इन को भी तौफ़ीक़ प्रदान करे।"

अल्लाह तआला जमाअत को प्यारे हुज़ूर की इस तहरीक पर जमाअत के सारे लोगों को सौ फीसद अमल करने की तौफीक़ अता फरमाए। और हम सब हुज़ूर की हिदायत के अनुसार हर हफते एक दिन नफली रोज़ा रखें ताकि अल्लाह तआला की मदद पहले से बढ़ कर हमारे साथ हो। अल्लाह तआला हमें इस की तौफीक अता फरमाए।

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

## कलाम

**हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम**

नूरे फ़ुर्क़ां है जो सब नूरों से अजला निकला
पाक वो जिस से यह अनवार का दरिया निकला
हक की तौहीद का मुरझा ही चला था पौधा
नागहाँ ग़ैब से यह चश्माए असफ़ा निकला
या इलाही तेरा फ़ुर्क़ां है कि इक आलम है
जो ज़रूरी था वो सब इस में मुहय्या निकला
सब जहाँ छान चुके सारी दुकानें देखीं
मय इर्फ़ां का यही एक ही शीशा निकला
किस से उस नूर की मुमकिन हो जहाँ में तश्बीह
वो तो हर बात में हर वस्फ़ में यक़्ता निकला
पहले समझे थे कि मूसा का असा है फ़ुर्क़ां
फिर जो सोचा तो हर लफ़्ज़ मसीहा निकला
है क़ुसूर अपना ही अन्धों का वगरना वो नूर
ऐसा चमका है कि सद नय्यरे बैयज़ा निकला
ज़िन्दगी ऐसो की क्या ख़ाक है इस दुनिया में
जिनका इस नूर के होते भी दिल अंमां निकला
जलने से आगे ही ये लोग तो जल जाते हैं
जिनकी हर बात फ़क़त झूठ का पुतला निकला

(बराहीन अहमदिया, भाग 3, पृ. 274, प्रकाशन 1882, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृ. 305)

## दुआ के कुबूल होने का राज़

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम का कथन है कि :

"दुआ बड़ी चीज़ है। अफसोस लोग नहीं समझते कि वह क्या है। कुछ लोग ये समझते हैं कि प्रत्येक दुआ जिस अदा और अवस्था पर माँगी जावे, अवश्य कुबूल हो जानी चाहिए। इसलिए जब वह कोई दुआ माँगते हैं और फिर वह अपने दिल में स्थापित शक्ल के अनुसार उसको पूरा होता नहीं देखते, तो निराश और हताश हो कर अल्लाह ताला पर बदज़न हो जाते हैं, हालाँकि मोमिन की ये शान होनी चाहिए कि यदि प्रत्यक्ष उसे अपनी दुआ में मुराद प्राप्त न हो, तब भी निराश न हो, क्योंकि इलाही रहमत ने इस दुआ को उस के पक्ष में लाभदायक नहीं रखा। देखो बच्चा अगर एक आग के अंगारे को पकड़ना चाहे तो माँ दौड़ कर उसे पकड़ लेगी, बल्कि यदि बच्चे कि इस बेवकूफ़ी पर एक थप्पड़ भी लगा दे, तो कोई अचम्भा नहीं। इसी प्रकार मुझे तो एक लज़्ज़त और आनन्द आ जाता है। जब मैं इस दुआ के रहस्य पर चिन्तन करता हूँ।" (मल्फ़ूज़ात भाग प्रथम, पृ. 434-435)

## इमाम के सामने सिर को झुका दो

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह सारे संसार के मुसलमानों को ख़िलाफ़त अला मिन्हाज नबुव्वत के मानने की अपील करते हुए कहते हैं :-

"अन्तिम पैग़ाम मेरा यही है कि समय के इमाम के सामने सिर को झुका दो। ख़ुदा ने जिसको भेजा है उसको स्वीकार करो वही है जो तुम्हारा सरदार बनने के योग्य है... ख़ुदा की स्थापित की गई कयादत के विरोध के बाद तुम्हारे लिए कोई अमन तथा शान्ति का मार्ग बाकी नहीं इसलिए... वापिस आओ तौबा तथा इस्ति-ग़फ़ार से काम लो मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि चाहे मामले कितने बिगड़ चुके हों यदि आज तुम ख़ुदा की स्थापित की गई क़यादत के सामने सिर झुका दोगे तो न केवल दुनिया के लिहाज़ से तुम एक प्रमुख ताकत के रूप में उभरोगे बल्कि सारे संसार में इस्लाम की नवीन विजय की एक ऐसी तहरीक चलेगी कि दुनिया की कोई ताकत उसका मुकाबला नहीं कर सकेगी।

(ख़ुत्बा जुम्मा 3 अगस्त 1990 ई.)

☆ ☆ ☆

# ख़ुत्बः जुमअः

## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत( प्रादुर्भव) का मकसद मसीह इब्न मरियम की वफात को साबित करना नहीं बल्कि व्यावहारिक हालतों का सुधार है

**वे बातें जो मुसलमानों के पतन का कारण बन रही हैं और जिनके सुधार के लिए अल्लाह तआला ने आप को भेजा है उन में से एक झूठ से बचना और सच्चाई की स्थापना है।**

**ख़ुदा तआला के मोमिन वे बन्दे हैं जो झूठ नहीं बोलते जो ऐसी जगहों पर नहीं जाते जहां व्यर्थ और झूठ बोलने वालों की मज्लिस जमी हो। वह अल्लाह तआला का शरीक नहीं बनाते न ही ऐसी जगहों पर जाते हैं जहां मुश्रिकाना काम हो रहे हैं और फिर कभी झूठी गवाही नहीं देते। तो अगर हम में से हर एक झूठ से बचे तो एक ऐसा बदलाव वे अपने अंदर पैदा कर सकता है जो वास्तविक मोमिन बनाती है।**

## हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से झूठ से बचने और सच्चाई पर कायम रहने के लिए ताकीदी नसीहत।

**हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान से आने या न आने के अकीदा से महत्त्वपूर्ण यह है कि अपने आप को शिर्क से पूरा पाक करो और अपनी व्यावहारिक हालतों को ऐसा बनाओ कि शिर्क का हिस्सा तक न हो। सच्चाई को स्थापित करो और झूठ से नफरत करो। अब इन बातों को सामने रखते हुए हर अहमदी समीक्षा करे।**

**आदरणीय कासिम तौरे साहिब मुअल्लिम एवरी कोस्ट की वफात मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा।**

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 5 फरवरी 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक जलसा पर एक साहिब ने अपनी तक़रीर में कहा कि हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम का सिलसिला और दूसरे मुसलमानों में केवल इतना फर्क है कि वे मसीह इब्न मरियम के ज़िन्दा आसमान में जाना स्वीकार करते हैं और हम मानते हैं कि वे वफात पा चुके हैं। इसके अलावा कोई ऐसी बात नहीं जो हमारे बीच और उनके बीच विवाद का कारण हो। क्योंकि इस बात से बहुत सी बातें और आप की बेअसत(प्रादुर्भव) का उद्देश्य स्पष्ट नहीं होता था इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी बावजूद तबीयत की ख़राबी के इस दिन इस बात का नोटिस लिया कि सिर्फ इतना फर्क नहीं है। आप ने 27 दिसंबर 1905 ई को ख़ुद इस बात को स्पष्ट करने के लिए एक तक़रीर फरमाई। जिसमें आपने कहा कि मेरी बेअसत का उद्देश्य केवल इतने से अंतर को दिखाना नहीं है। इतनी सी बात के लिए इतने छोटे काम के लिए अल्लाह तआला को सिलसिला कायम करने की ज़रूरत नहीं थी बल्कि इस में आप ने बहुत सी बातें बयान फरमाईं।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 334-335 प्रकाशन 1985 यू. के)

फरमाया ठीक है वफात मसीह का अकीदा एक फर्क है और फिर आप ने फरमाया कि मुसलमानों की व्यावहारिक हालत भी बिगड़ चुकी थी और इस बारे में फिर आप ने विस्तार से फरमाया। इन व्यावहारिक हालतों के बारे में जो बातें आपने बयान फरमाईं जो मुसलमानों के पतन का कारण बन रही हैं और जिनके सुधार के लिए अल्लाह तआला ने आप को भेजा है उन में से एक झूठ से बचना और सच्चाई की स्थापना है और आप ने जमाअत को इस संबंध में नसीहत की कि अपने सच्चाई के स्तरों को ऊंचा करो और अपने और ग़ैर में इस अंतर को प्रकट करो। सिर्फ ईमान ले आना और आप की बेअसत को सच्चा मान लेना कुछ काम नहीं आता।

आप के शब्दों में ये बातें मैं आपके सामने रखूंगा। अगर हम में से प्रत्येक इंसाफ से अपनी समीक्षा करे तो कई ऐसे हैं जिन्हें ख़ुद ही पता चल जाएगा कि जो गुणवत्ता प्राप्त करने की तरफ जो जमाअत को ध्यान देना चाहिए जिस की तरफ हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ध्यान दिलाया है वह स्तर नहीं।

अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में भी हकीकी मोमिनों की यही निशानी बताई है कि لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ (अल्फुर्कान 73)कि वह झूठी गवाही नहीं देते। फिर शिर्क और झूठ के बारे में बताया कि उन से बचो। इकट्ठा किया शिर्क और झूठ को। मानो झूठ का गुनाह भी शिर्क की तरह है। अल्लाह तआला ने कुरआन में जो शब्द इस्तेमाल किया है वह जैसा कि मैंने पढ़ा "ज़ूर" का शब्द का इस्तेमाल किया है जिसके मायने हैं झूठ, ग़लत बयानी, ग़लत गवाही, ख़ुदा तआला का शरीक ठहराना, ऐसी मज्लिसें या स्थान जहां झूठ प्राय बोला जाता हो,इसी तरह गाने बजाने और व्यर्थ और ग़लत ब्यानों की मज्लिसें यह सारी "ज़ूर" के अर्थ में आती हैं।

तो ख़ुदा तआला के मोमिन वे बन्दे हैं जो झूठ नहीं बोलते जो ऐसी जगहों पर नहीं जाते जहां व्यर्थ और झूठ बोलने वालों की मज्लिस जमी हो। वह अल्लाह तआला का शरीक नहीं बनाते न ही ऐसी जगहों पर जाते हैं जहां मुश्रिकाना काम हो रहे हैं और फिर कभी झूठी गवाही नहीं देते। तो अगर हम में से हर एक इस तरह के झूठ से बच्चे तो एक ऐसा बदलाव वे अपने अंदर पैदा कर सकता है जो वास्तविक मोमिन बनाती है।

बहरहाल मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िताब का वह हिस्सा पेश कर देता हूं जिस में झूठ के बारे में आपने फ़रमाया। इस को ध्यान से सुनें। आज हम में से भी कई या बहुत ऐसे हैं जिन्हें इस पर विचार करने की ज़रूरत है। मुसलमानों के बिगड़ने और उनके भेदभाव की वजह बयान फरमाते हुए आपने फरमाया कि

"मुसलमानों में आंतरिक फूट का कारण यही दुनिया की मुहब्बत ही हुई है (दुनिया की मुहब्बत का पीछे से एक उल्लेख चल रहा है इस बारे में आपने

फरमाया यह दुनिया की मुहब्बत ही है जो मुसलमानों में फूट डालने का कारण है) क्योंकि अगर सिर्फ अल्लाह तआला की रज़ा पहले होती तो आसानी से समझ में आ सकता था कि अमुक फिर्के के उसूल (सिद्धांत) अधिक साफ हैं और वह उन्हें स्वीकार करके एक हो जाते। अब जबकि दुनिया की मुहब्बत के कारण यह ख़राबी पैदा हो रही है तो ऐसे लोगों को कैसे मुसलमान कहा जा सकता है, जबकि उनका कदम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़दम नहीं" है। फरमाया कि "अल्लाह तआला ने तो फरमाया था (कि) قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ

(आले इम्रान 32)यानी अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत करते हो तो मेरा अनुसरण करो अल्लाह तआला तुम को दोस्त रखेगा। अब इस अल्लाह तआला की मुहब्बत की बजाय और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण की बजाय दुनिया की मुहब्बत को प्राथमिकता दी है।" (आप सवाल उठा रहे हैं) "क्या यही आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इत्तेबा(अनुसरण) है ?" (धर्म को छोड़कर दुनिया की तरफ डूब जाओ) "क्या आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुनियादार थे? क्या वह सूद लेते थे? या फर्ज़ और आदेशों को पूरा करने में लापरवाही करते थे ? क्या आप में मुआज़ अल्लाह मुनाफकत था ? मदाहना (कपट) था? दुनिया को धर्म पर प्राथमिकता देते थे ? अनुसरण तो यह है कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के नक्शे कदम पर चलो।" (आप तो धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देते थे न कि दुनिया को धर्म पर) "और फिर यही देखो कि ख़ुदा तआला कैसे कैसे फ़ज़ल करता है।" फरमाया कि "आप के नक्शे कदम पर चलो फिर देखो कि ख़ुदा तआला कैसे कैसे फ़ज़ल करता है। सहाबा ने वह चलन अपनाया था। फिर देख लो कि अल्लाह तआला ने उन्हें कहां से कहां पहुंचाया। उन्होंने दुनिया पर लात मार दी थी और बिल्कुल दुनिया की मुहब्बत से अलग हो गए थे। अपनी इच्छाओं पर एक मौत वारिद कर ली थी। अब तुम अपनी हालत का उनसे मुकाबला कर के देख लो। क्या उन्हीं के नक्शे कदम पर हो ? अफसोस इस समय लोग नहीं समझते कि ख़ुदा तआला उनसे क्या चाहता है? رَأْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ ("राअसो कुल्ले खतिअतिन") ने कई बच्चे दे दिए हैं।" फरमाया कि "कोई आदमी अदालत में जाता है तो दो आने के लिए झूठी गवाही देने में जरा शर्म हया नहीं करता। क्या वकील कसम खाकर कह सकते हैं कि सारे के सारे गवाह सच्चे पेश करते हैं।"

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 348-349 संस्करण 1985 प्रकाशन यू. के)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अस्सानी ने हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब के बारे में एक घटना का वर्णन किया। वह मजिस्ट्रेट थे। कहते हैं एक बार मेरे पास एक आदमी आया जिसे मैं जानता था। तारीख थी गवाहों की पेश होने की। उसने कहा कि मुझे अगली तारीख़ दे दो मेरे गवाह हाज़िर नहीं हुए तो हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब ने इसे मज़ाक से कहा कि मैं तो तुम्हें बड़ा अक्लमंद समझता था तुम तो बड़े बेफकूफ निकले। गवाह कहां से तुम ने आप लाने हैं। बाहर जाओ किसी को आठ आने रुपया दो वे तुम्हारे गवाह बन आ जाएंगे। ख़ैर वह आदमी बाहर चला गया और थोड़ी देर बाद दो तीन आदमी ले आया गवाह और गवाह से हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब जब जिरह करते थे तो वह बड़ा जवाब देता हां मैंने देखा इस तरह घटना हुई है, इस तरह घटना हुई है। हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब कहते हैं कि मैं दिल दिल में हंस रहा था बल्कि उसके सामने ही हँस रहा था कि मेरे कहने पर यह बाहर गया है गवाह लेकर आया है और गवाह कितनी सफाई से मेरे सामने झूठ बोल रहे हैं और ख़ुदा की कसम खा कर कुरआन हाथ में पकड़ कर झूठ बोल रहे हैं। तो इस के बाद जब उन्होंने गवाही दी। मैंने उन्हें कहा तुम्हें शर्म नहीं आती कि कुरआन हाथ में पकड़ कर कुरआन के ऊपर गवाही दे रहे हो और मेरे सामने ले आए हो।

( उद्धरित " अपने अन्दर सच्चाई मेहनत और ईसार के गुण पैदा करो अन्वारुल अलूम भाग 22 पृष्ठ 291)

तो यह गवाहों का हाल है और आज भी यही हाल है। जमाअत के ख़िलाफ तो मुकदमों में हमें अक्सर नज़र आता है कि बहुत सारे लोग जो मौजूद भी नहीं होते वे गवाह बन के किसी मुकदमें में पेश हो जाते हैं। तो बहरहाल कहते हैं कि "आज दुनिया की हालत बहुत नाज़ुक हो गई है। जिस पहलू से और तरीके से देखो झूठे गवाह बनाए जाते हैं। झूठे मुकदमा करना तो बात ही कुछ नहीं। झूठी सनदें बना ली जाती हैं।" (सारे कागज़ात documents झूठे बना लिए जाते हैं। किसी सरकारी अधिकारी को पैसे दिए और झूठे बना लिए) "कोई बात वर्णन करेंगे तो सच का पहलू बचाकर बोलेंगे "(यानी सच से दूर ही रहेंगे और आजकल तो यह हालत पहले से भी बढ़ गई है) "अब कोई उन लोगों से जो इस सिलसिले की ज़रूरत नहीं समझते पूछे कि क्या यही वह धर्म था जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लाए थे? (सिलसिले की ज़रूरत के बारे में आप ने इन आचरण को पेश किया और कहा कि केवल इतना ही कह देना कि मसीह आसमान में नहीं है और ज़मीन में फौत हो चुके हैं अब जिस ने आना था वह आ गया है काफी है। नहीं बल्कि यह उच्च अख़लाक हैं नैतिकताएं हैं जो क़ायम करने होंगे और इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने भेजा) फरमाया कि "अल्लाह तआला ने तो झूठ को गंदगी कहा था कि इस से परहेज़ करो।

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ

(अल्हज्ज: 31)

मूर्ति पूजा के साथ इस झूठ को मिलाया है।" फरमाया "जैसे बेफकूफ इंसान अल्लाह तआला को छोड़कर पत्थर की तरफ सिर झुकाता है वैसे ही सच्च और सच्चाई को छोड़ कर अपने मतलब के लिए झूठ को बुत बनाता है। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने उसे मूर्ति पूजा के साथ मिलाया और निस्बत दी जैसे एक बुत की पूजा करनेवाला मूर्ति से मुक्ति चाहता है। झूठ बोलने वाला भी अपनी ओर से बुत बनाता है और समझता है कि बुत के द्वारा निजात हो जाएगी। कैसी ख़राबी आ पड़ी है अगर कहा जाए कि क्यों बुत परस्त होते हो। इस गंदगी को छोड़ दो तो कहते हैं कैसे छोड़ दें इस के बिना गुज़ारा नहीं हो सकता। इस से बढ़कर और क्या बद किस्मती होगी कि झूठ पर अपना भरोसा रखते हैं मगर मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि आख़िर सच ही सफल होता है। भलाई और जीत उसी की है।"

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 349-350 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी एक घटना बयान फ़रमाते हैं कि

"सत्ताईस अट्ठाईस साल का समय बीता होगा या शायद इससे कुछ अधिक हो जाएगा कि इस विनीत ने इस्लाम के समर्थन में आर्यों के विरुद्ध एक ईसाई के प्रैस में जिसका नाम रुलिया राम था और वकील भी था और अमृतसर में रहता था और उसका एक अख़बार भी निकलता था। एक लेख छपने के लिए एक पैकेट के रूप में जिस की दोनों तरफें खुली थीं भेजा।" (अब यह घटना कई लोगों ने हम में से सुना हुआ है। बयान भी करते हैं लेकिन केवल सिर्फ बयान करते हैं अमल हम में से कुछ नहीं कर रहे होते) फरमाया कि "और इस पैकेट में एक ख़त भी रख दिया। चूंकि ख़त में ऐसे शब्द थे जिन में इस्लाम का समर्थन और अन्य धर्मों के झूठा होने की तरफ इशारा था और लेख छापने के ताकीद भी थी इसलिए वह ईसाई धर्म के विरोध के कारण नाराज़ हुआ और संयोग से उस दुश्मन को हमले के लिए यह मौका था कि किसी अलग ख़त का पैकेट में रखना कानून की नज़र में एक गुनाह था। जिस की इस विनीत को कुछ भी ख़बर नहीं थी और ऐसे गुनाह की सज़ा में डाक नियमों की दृष्टि में पांच सौ रुपए जुर्माना या छह महीने तक कैद है। उस ने मुख़बिर बन कर डाक अफसरों से इस विनीत पर मुकदमा दायर कराया और इस से पहले कि मुझे इस मामले की कुछ जानकारी हो। रोया में अल्लाह तआला ने मेरे पर ज़ाहिर किया कि रुलिया राम वकील ने एक साँप मेरे काटने के लिए मुझे भेजा है और मैंने यह मछली की तरह तल कर वापस भेज दिया। मैं जानता हूँ कि यह इस बात का संकेत था कि आख़िर वह मुकदमा जिस शैली से अदालत में फैसला पाया वह एक ऐसी मिसाल है जो वकीलों के काम आ सकती है।

अत: मैं इस जुर्म में ज़िला गुरदासपुर में बुलाया गया और जिन-जिन वकीलों से मुकदमा के लिए सलाह ली गई उन्होंने ने यही सलाह दी कि झूठ बोलने के अलावा और कोई रास्ता नहीं और यह सलाह दी कि इस तरह कह दो कि हम ने पैकेट में ख़त नहीं डाला। रुलिया राम ने ख़ुद डाल दिया होगा और साथ ही बतौर तसल्ली के कहा कि ऐसा बयान करने से गवाही पर फैसला हो जाएगा और दो चार झूठे गवाह को देकर बरीयत हो जाएगी।" (यानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को वकील सलाह दे रहे हैं कि झूठे गवाह पेश करो) "वरना" (वकीलों ने कहा कि) "मुकदमा का मामला सख्त मुश्किल है और कोई तरीका रिहाई (का) नहीं( है।) (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं मगर )

"मैंने उन सब को जवाब दिया कि मैं किसी हालत में सच्चाई को छोड़ना नहीं चाहता। जो होगा सो होगा। तब उसी दिन या अगले दिन मुझे एक अंग्रेज़ की अदालत में पेश किया गया और मेरे विरुद्ध में डाकखाना का अधिकारी बतौर सरकारी मुद्दई होने के हाज़िर हुआ। उस वक्त हाकिम अदालत ने अपने हाथ से मेरा इज़हार लिखा और सब से पहले मुझ से यही सवाल किया कि क्या यह ख़त आप ने अपने पैकेट में रखा था और यह ख़त और पैकेट तुम्हारा है ? तब मैंने जल्दी से कहा कि यह मेरा ही ख़त है और मेरा ही पैकेट है और मैंने इस ख़त को पैकेट के अंदर रखकर रवाना किया था मगर मैंने सरकार को राजस्व का नुकसान पुहंचाने की भावना से यह काम नहीं किया।" (सरकार को नुकसान पुहंचाने के लिए पैसे हज़म करने के लिए यह काम नहीं किया था) "बल्कि मैंने इस ख़त को इस विषय से कुछ अलग नहीं समझा और न इस में अपनी कोई बात थी। इस बात को सुनते ही ख़ुदा तआला ने अंग्रेज़ का दिल मेरी ओर फेर दिया और मेरे विरुद्ध डाकखाना के अफसर ने बहुत शोर मचाया और लम्बी लम्बी तकरीर अंग्रेज़ी में कीं जिन्हें मैं नहीं समझता था। मगर इतना मैं समझता था कि प्रत्येक तकरीर के बाद अंग्रेज़ी ज़बान में वह अधिकारी "नो नो" करके उस की सब बातों को खारिज कर देता था। अन्त में जब वह शिकायत करने वाला अधिकारी अपने सारे कारणों को प्रस्तुत कर चुका और अपने सारे ग़ुस्से को निकाल चुका तो हाकिम ने फैसला लिखने के लिए ध्यान दिया और शायद पंक्ति डेढ़ पंक्ति लिख कर मुझे कहा कि अच्छा आप के लिए इजाज़त" (है।) "यह सुनकर मैं अदालत के कमरे से बाहर निकला और अपने वास्तविक मोहसिन का शुक्र अदा किया जिस ने एक अंग्रेज़ अफसर के मुकाबले पर मुझे ही विजय दी और मैं ख़ूब जानता हूँ कि इस समय ईमानदारी की बरकत से ख़ुदा तआला ने इस बला से मुझे आज़ादी दी। मैंने इससे पहले यह सपना भी देखा था कि एक आदमी ने मेरी टोपी उतारने के लिए हाथ मारा। मैंने कहा क्या करने लगा है? तब उसने टोपी को मेरे सिर पर ही रहने दिया कि ख़ैर है, ख़ैर है।"

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 350-353 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "मैं कैसे कहूँ कि झूठ के बिना गुज़ारा नहीं। ऐसी बातें निरी बेहूदगियाँ हैं। सच तो यह है कि सच्चाई के बिना गुज़ारा नहीं। मैं अब तक भी जब अपनी इस घटना को याद करता हूँ तो एक मज़ा आता है (यह डाकखाना वाली घटना, अदालत वाली घटना) फरमाया कि "इस घटना को याद करता हूँ तो एक मज़ा आता है कि ख़ुदा तआला के पक्ष को धारण किया। उसने हमारी रियायत रखी और ऐसी रियायत रखी जो बतौर निशान हो गई। مَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ (अत्तलाक 04) (जो अल्लाह तआला पर पूरा भरोसा करता है अल्लाह तआला उसके लिए काफी हो जाता है।)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"नि:सन्देह याद रखो झूठ जैसी कोई मनहूस बात नहीं। आम तौर पर दुनियादार कहते हैं कि सच बोलने वाले गिरफ्तार हो जाते हैं, लेकिन मैं कैसे इसे मान लूं ? मुझ पर सात मुकदमे हुए हैं और ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से किसी एक में" (एक शब्द) "भी मुझे झूठ लिखने की ज़रूरत नहीं पड़ी। कोई बताए कि किसी एक में भी ख़ुदा तआला ने मुझे हराया हो। अल्लाह तआला तो आप सच्चाई का समर्थक और सहयोगी है। यह हो सकता है कि वह सच्चे को सज़ा दे ?" (यह कैसे हो सकता है) "अगर ऐसा हो तो दुनिया में फिर कोई आदमी सच बोलने का साहस न करे और ख़ुदा तआला पर से ही ईमान उठ जाए। सच्चे तो जिंदा ही मर जाएं।"

फिर आप फरमाते हैं कि "असल बात यह है कि सच बोलने से जो सज़ा पाते हैं वह सच की वजह से नहीं होती।" (अगर किसी ने सच बोला किसी मामले में या किसी वजह से अगर कोई सज़ा मिली है तो इसलिए नहीं मिली की उसने सच बोला था अगर वह झूठ बोलता तो सज़ा न मिलती बल्कि फरमाया) "वह सज़ा उन की कुछ और बहुत छिपी हुई बुराई की होती है।" (जो दूसरे छिपे हुए गुनाह किए हैं, कई बार उनकी सज़ा होती है ) "और एक और झूठ की सज़ा होती है। ख़ुदा तआला के पास तो उनकी बदियों और शरारतों की एक श्रृंखला है। इनके बहुत से गुनाह होते हैं और किसी न किसी में वह सज़ा पा लेते हैं।"

इस के बाद बयान करते हुए फरमाया कि कैसे कई बार दुनिया में भी हम देखते हैं कि एक छोटी सी बात होती है उसकी सज़ा बड़ी मिल रही होती है। एक घटना बयान फरमाते हैं कि "मेरे एक उस्ताद गुल अली शाह बटाला के रहने वाले थे। वह शेर सिंह पुत्र प्रताप सिंह को भी पढ़ाया करते थे। उन्होंने वर्णन किया कि एक बार शेर सिंह ने अपने रसोईया को सिर्फ नमक मिर्च के ज़यादा होने पर बहुत मारा क्योंकि वह बड़े सरल स्वभाव थे।" (यह शिक्षक गुल अली शाह साहिब) "उन्होंने कहा कि आप ने बड़ा ज़ुल्म किया।" (इस मार खाने वाले ने नमक ही खाने में ज़यादा डाला था न) "इस पर शेर सिंह ने कहा। मौलवी जी को ख़बर नहीं उस ने मेरा सौ बकरा खाया है। इसी तरह से आदमी की बुराई का एक संग्रह होता है और वह किसी एक मौके पर पकड़ा जाकर सज़ा पाता है।" फरमाया जो आदमी सच्चाई अपनाएगा कभी नहीं हो सकता कि अपमानित किया क्यूंकि वह ख़ुदा तआला की हिफाज़त में होता है और ख़ुद तआला की हिफाज़त जैसा और कोई सुरक्षित किला और हिसार नहीं" (है) लेकिन अधूरी बात फायदा नहीं पहुंचा सकती। क्या कोई कह सकता है कि जब प्यास लगी हो तो केवल एक बूंद पी लेना काफी होगा या भूख की तीव्रता के समय एक लुक्मा या कौर से तृप्त हो जाएगा। बिल्कुल नहीं बल्कि जब तक पूरा तृप्त होकर पानी न पिए या खाना न खा ले तसल्ली नहीं होगी। इसी तरह जब तक कामों में पूर्णता न हो वह फल और परिणाम पैदा नहीं होते जो होने चाहिए। घटिया काम अल्लाह तआला को ख़ुश नहीं कर सकते और न वह बरकत वाले हो सकते हैं। अल्लाह तआला का यही वादा है कि मेरी इच्छा के अनुसार काम करो फिर बरकत दूंगा।"

फिर आप फरमाते हैं कि "ग़रज़ ये बातें दुनियादार ख़ुद ही बना लेते हैं कि झूठ और फरेब के बिना गुज़ारा नहीं। कोई कहता है अमुक आदमी ने मामले में सच बोला था इसलिए चार साल का धरा गया। मैं फिर कहूंगा कि यह सब काल्पनिक बातें हैं जो माअरफत के बिना पैदा होती हैं।"

फरमाया कि "कस्बे कमाल कुन कि अज़ीज़े जहां शवी" यानी पूर्णता को प्राप्त कर ताकि तो दुनिया का प्यारा बन जाए। यह अपनी कमजोरियां हैं। जो झूठ बलुवाती हैं अगर नेकियों पर ध्यान हो और इंसान उस पर बढ़ने की कोशिश करे, अल्लाह तआला पर भरोसा हो तो फिर यह सज़ाएं इस तरह नहीं मिला करतीं। ) फरमाया "यह त्रुटि के परिणाम हैं।" (यह अपनी कमज़ोरियों के जो त्रुटि है उस के नतीजे में यह सज़ाएं मिलती हैं) "कमाल ऐसे परिणाम पैदा नहीं करता है। एक आदमी अगर अपनी मोटी सी खद्दर की चादर में कोई तोपा भरे तो इस से वे दर्ज़ी नहीं बन जाएगा।" (यानी कोई टांके लगा दे खद्दर की चादर में तो इस से उसे यह नहीं कह सकते कि वे दर्ज़ी है उसे बड़ा अच्छा सीना आता है।) "और यह लाज़मी नहीं होगा कि उच्च स्तर के रेशमी कपड़े भी वह सी लेगा। अगर यह ऐसे कपड़े दिए जाएं तो नतीजा यही होगा कि वह उन्हें बर्बाद कर देगा।" फरमाया "इसलिए तो ऐसी नेकी जिस में गंद मिला हो किसी काम की नहीं। ख़ुदा तआला के सामने उसकी कुछ क़ीमत नहीं लेकिन ये लोग उस पर गर्व करते हैं और उसके द्वारा नजात (उद्धार) चाहते हैं। अगर ईमानदारी हो तो अल्लाह तआला तो एक कण भी किसी नेकी को नष्ट नहीं करता। उसने फरमाया है। مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ (अल्लबय्यनह 6)( कि जिस ने कण भर भी नेकी की होगी तो वह उस का नतीजा देखेगा और परिणाम पाएगा)(फरमाया) "इस लिए अगर कण मात्र भी नेकी की हो तो अल्लाह तआला से इस का इनाम पाएगा। फिर क्या कारण है कि इतनी अच्छाई करके फल नहीं मिलता। इसकी वजह यही है कि इस में ईमानदारी नहीं आई है। कामों के लिए ईमानदारी शर्त है, कार्यों के लिए ईमानदारी शर्त है जैसा कि फरमया। "मुख़लेसीन लहुद्दीन।" यह इख़लास (ईमानदारी) उन लोगों में होता है जो अबदाल हैं।" (अल्लाह तआला फरमाता है धर्म को अल्लाह के लिए ख़ालिस(पवित्र) करो।)

तो अब यह सब बातें हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन की हैं और बड़े दर्द के साथ वर्णन की हैं और जैसा कि मैंने बताया इस संबंध में वर्णन की हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान से आने या न आने के अकीदा से महत्त्वपूर्ण यह है कि अपने आप को शिर्क से पूरा पाक करो और अपनी व्यावहारिक हालतों को ऐसा बनाओ कि शिर्क का हिस्सा तक न हो। सच्चाई को स्थापित करो और झूठ से नफरत करो। अब इन बातों को सामने रखते हुए हर अहमदी समीक्षा करे जैसे कई बातें ऐसी हैं कुछ बयान करता हूँ। मुकदमों में यह समीक्षा करें कि हम ग़लत बोलने से काम तो नहीं लेते। फिर हम कारोबार में फायदा की ख़ातिर ग़लत बोलने से काम तो नहीं लेते। फिर हम रिश्ता तय करते समय ग़लत बात तो नहीं करते। क्या हर तरह से सच्ची बात से काम लेते हैं। लड़के के बारे में और लड़की के बारे में हर जानकारी दी जाती हैं। हुकूमत से और सोशल अलाउंस लेने के लिए झूठ का सहारा तो नहीं लेते। इस बारे में तो

कई लोगों के बारे में नकारात्मक धारणा पाई जाती है कि अपनी आय छिपाकर सरकार से भत्ता लिया जाता है और इसी वजह से करों की अदायगी नहीं की जाती है। यहाँ टैक्स भी चोरी होता है। हमें याद रखना चाहिए कि अब जो सामान्य दुनिया की आर्थिक हालत है। हर सरकार समस्याओं का शिकार हो रही है या हो गई है और अगर नहीं हुई तो हो जाएगी। इसलिए अब सरकारें गहराई में जाकर सच्चाई जानने की कोशिश करती हैं और कर रही हैं। तो अगर सरकार के सामने कोई ग़लत बात आ जाती है तो जहां वह उस आदमी के लिए मुश्किलें पैदा करेंगी ये बातें वहाँ अहमदियत की बदनामी का कारण भी बनेंगी अगर यह पता हो कि वह आदमी अहमदी है।

इसलिए जो इस मामले में किसी भी ग़लत बयानी से काम ले रहे हैं। वे सांसारिक लाभ को न देखें थोड़े में गुज़ारा कर के झूठ से बचकर अल्लाह तआला को ख़ुश करने की कोशिश करें।

फिर असाईलम (शरण) के मामले हैं इस में अपनी समीक्षा करें कि ग़लत बयानी से काम तो नहीं लिया जा रहा। बेशक वकील इसके लिए उभारते हैं और यह हमेशा से वकीलों का तरीका है जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी कहा है कि आप झूठ बोलें और झूठे गवाह पेश कर दें। इसी तरह ओहदेदार भी अपनी समीक्षा करें कि क्या वह अपनी रिपोर्ट में ग़लत बयानी तो नहीं कर रहे है या कोई ऐसी बात तो नहीं छोड़ देते जिसकी अहमियत हो। पहले भी मैंने एक बार एक ख़ुत्बे में कहा था कि पूरी तरह सच्ची बात से अगर काम न लिया जाए तो वह भी ग़लत है। तक़वा से काम लेते हुए मामले निपटाए जाने चाहिए।(ख़ुत्बाते मसरूर जिल्द 10 पृष्ठ 539 7 सितम्बर 2012)इसलिए बहुत गहराई में जाकर मामले को देखने की ज़रूरत है। प्रत्येक अपने हितों से बाहर निकल कर अपनी अनाओं से बाहर निकल कर ख़ुदा तआला के तक्वा को सामने रखते हुए अपने मामले निपटाए और इस तरह अपने मामले निपटाने चाहिए। अगर यह सब कुछ नहीं तो जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि यह सब कुछ दुनिया की मुहब्बत को व्यक्त करना है और दुनिया की मुहब्बत जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है फूट की ओर लेकर जाती है और फूट से फिर ज़ाहिर है जमाअत की इकाई भी स्थापित नहीं रहती या कम से कम इस समाज में इस क्षेत्र में एक फित्ना पैदा हो जाता है और वह इकाई जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बनाने आए थे ख़त्म हो जाती है। दुनिया की मुहब्बत के कारण ही बाकी फिर्के बने थे। इसी तरह फिर एक फिर्का बन जाएगा। गोया कि एक बुराई से कई बुराइयां जन्म लेती हैं। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बुराइयां तो बच्चे देती चली जाती हैं। इसलिए अहमदी होकर हम पर बहुत ज़िम्मेदारियां पड़ रही हैं जिन्हें हमें अपने सामने रखना चाहिए। वास्तविक अहमदी तो वही है जो उस्वा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर चलने की कोशिश करे और ख़ुदा तआला का बनने की कोशिश करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह इसी क्रम में जो मैं पीछे वर्णन किया है फ़रमाते हैं। "यह ख़ूब याद रखो कि जो आदमी ख़ुदा तआला के लिए हो जाए ख़ुदा तआला उस का हो जाता है और ख़ुदा तआला किसी के धोखे में नहीं आता। अगर कोई यह चाहे कि कपट और छल से ख़ुदा तआला को ठग लूँगा तो यह मूर्खता और अज्ञानता है। वह ख़ुद ही धोखा खा रहा है। दुनिया की ख़ूबसूरती, दुनिया की मुहब्बत सारी ग़लतियों की जड़ है।" (दुनिया की सुंदरता और दुनिया का प्यार क्या है यह सब ग़लतियों की जड़ है) "इस में अंधा होकर आदमी इंसानियत से निकल जाता है और नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ और मुझे क्या करना चाहिए था। जिस हालत में बुद्धिमान इंसान किसी के धोखे में नहीं आ सकता तो अल्लाह तआला कैसे किसी के धोखे में आ सकता है। मगर ऐसे बुरे कामों की जड़ दुनिया की मुहब्बत है और सबसे बड़ा गुनाह जिस ने इस वक्त मुसलमानों को तबाह कर रखा है और जिस में वे पीड़ित हैं वह यही दुनिया की मुहब्बत है। सोते जागते उठते बैठते चलते हर समय लोग इसी ग़म और दु:ख में फंस रहे हैं और उस समय का ध्यान भी नहीं कि जब कब्र में रखे जाएंगे। ऐसे लोग अगर अल्लाह तआला से डरते और धर्म के लिए ज़रा भी दु:ख और ग़म रखते तो बहुत फायदा उठा लेते। फरमाया सादी (जो फारसी का शायर है) कि कहता है।

गर वज़ीर अज़ ख़ुदा अबतर सदे।

काश वज़ीर ख़ुदा से डरता। मुलाज़िम लोग थोड़ी सी नौकरी के लिए अपने काम में कैसे चुस्त और चालाक होते हैं लेकिन जब नमाज़ का समय आता है तो ज़रा ठंडा पानी देख कर ही रह जाते हैं। ऐसी बातें क्यों पैदा होती हैं ? इसलिए कि अल्लाह तआला की महानता दिल में नहीं होती। अगर ख़ुदा तआला की कुछ भी महानता हो और मरने का ख़याल और विश्वास हो तो सारी सुस्ती और लापरवाही जाती रहे। इस लिए ख़ुदा तआला की महिमा दिल में रखनी चाहिए और हमेशा डरना चाहिए। उसकी पकड़ ख़तरनाक होती है। वह अनदेखी करता है और दरगुज़र कहता है लेकिन जब किसी को पकड़ता है तो फिर सख़्त पकड़ता है यहां तक कि لَا يَخَافُ عُقْبٰهَا (अश्शमस 16)फिर वह इस बात की भी परवाह नहीं करता कि उसके पिछलों का क्या हाल होगा। इस के उलट जो लोग अल्लाह तआला से डरते और उसकी महानता को दिल में जगह देते हैं। ख़ुदा तआला उन्हें सम्मान देता और ख़ुद उनके लिए एक ढाल हो जाता है। हदीस में आया है "मन कान लिल्लाह कानल्लाहो लहू"। यानी जो अल्लाह तआला के लिए हो जाए अल्लाह तआला उसका हो जाता है। मगर अफसोस यह है कि जो लोग इस ओर ध्यान भी करते हैं और ख़ुदा तआला की तरफ आना चाहते हैं उन में से ज्यादातर यही चाहते हैं कि हथेली पर सरसों जमा दी जाए। वह नहीं जानते कि धर्म के कामों में कितना धैर्य और साहस की ज़रूरत है और हैरत तो यह है कि वह दुनिया जिस के लिए वह रात दिन मरते और टकरें मारते हैं इस काम के लिए तो बरसों इंतजार करते हैं। किसान बीज बो कर कितने समय तक इंतज़ार करता रहता है लेकिन धर्म के कामों में आते हैं तो कहते हैं कि फूंक मार कर वली बना दो और पहले ही दिन चाहते हैं कि अर्श पर पहुँच जाएं। हालांकि न इस रास्ते में कोई मेहनत उठाई और न किसी परीक्षा के नीचे आए।"

फरमाया कि "ख़ूब याद रखो कि अल्लाह तआला का यह कानून और संविधान नहीं है। यहां हर तरक्की क्रम से होती है और ख़ुदा तआला केवल इतनी बातों से ख़ुश नहीं हो सकता कि हम कह दें हम मुसलमान हैं या मोमिन हैं। अत: उस ने फरमाया है कि اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ (अलअन्कबूत 3) यानी क्या यह लोग गुमान कर बैठे हैं कि अल्लाह तआला इतना ही कहने पर राज़ी हो जाएगा और वे छोड़ दिया जांएंगे कि वह कह दें हम ईमान लाए और उनकी कोई परीक्षा न हो। यह बात अल्लाह तआला की सुन्नत के ख़िलाफ है कि फूंक मारकर वली उल्लाह बना दिया जाए। अगर यही सुन्नत होती तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसा ही करते और फिर अपने जान निसार सहाबा को फूंक मारकर वली बना देते। उन्हें परीक्षा में डाल कर उनके सिर न कटवाते और ख़ुदा तआला उनके बारे यह न कहता कि مِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا (अलअहज़ाब 24)अत: उन में से वे भी हैं जिस ने अपनी मन्नत को पूरा किया और उनमें से वे भी जो अब इंतजार कर रहे हैं।

आपने फ़रमाया "जब दुनिया बिना कठिनाइयों और मेहनत के हाथ नहीं आती तो अजीब बेवकूफ है वह इंसान जो धर्म को मुफत का हलवा समझता है। यह तो सच है कि धर्म आसान है मगर हर नेअमत कठिनाई को चाहती है। यद्यपि इस्लाम ने तो ऐसी कठिनाई नहीं रखी। हिंदुओं में देखो कि उनके जोगियों और संयासियों को क्या करना पड़ता है। कहीं उनकी कमरें मारी जाती हैं। कोई नाखून बढ़ाता है। ऐसा ही ईसाइयों में रहबानियत थी। इस्लाम ने इन बातों को नहीं रखा बल्कि उसने यह सिखाया है कि قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا (अश्शमस 10)यानी बचाया गया वह आदमी जिस ने तज़किया नफ्स (आत्म शुद्धि) किया। यानी जिस ने प्रत्येक प्रकार की बिदअत फिस्क़ तथा फजूर नफसानी भावनाओं से ख़ुदा तआला के लिए अलग कर लिया और हर प्रकार के नफसानी सुख को छोड़कर ख़ुदा के रास्ते में तकलीफ को प्राथमिकता दी। ऐसा आदमी सचमुच नजात पाने वाला है जो ख़ुदा तआला को मुकद्दम करता है और दुनिया और इसके तकल्लुफ़ात को छोड़ता है।

अल्लाह तआला करे कि हम अपने अंदर व्यावहारिक परिवर्तन पैदा करने वाले हों। सच्चाई की गुणवत्ता के महत्त्व को समझने वाले हों। धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाले हों। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर बस अपने मूहुं से नहीं, वास्तव में आप की बेअसत के उद्देश्य को समझने वाले हों और उसे पूरे करने वाले हों। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा

हस्ना पर चलने की पूरी कोशिश करने वाले हों और अल्लाह तआला की रज़ा को हर चीज़ पर मुकद्दम कर के उसे हासिल करने की कोशिश करने वाले हों। अल्लाह तआला हमें इसकी ताकत प्रदान करे।

नमाज़ के बाद एक नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा जो आदरणीय क़ासिम तोरे साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला आइवरी कोस्ट का है। यह वहाँ के स्थानीय निवासी थे। 25 जनवरी 2016 ई को अल्लाह तआला के तकदीर के अनुसार वफात गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप ने 1986 ई में अहमदियत क़बूल की थी। अहमदियत क़बूल करने से पहले आप एक निजी मदरसा चलाते थे और अहमदियत में दाख़िल होने के बाद आप ने वह अपना मदरसा जमाअत को पेश कर दिया जिसे बाद में प्राथमिक स्कूल में बदल दिया गया। 1990 ई में जामिया अहमदिया आइवरी कोस्ट से मिशनरी कोर्स जो मुरब्बी का कोर्स है, मुअल्लिम का कोर्स है पूरा किया और फिर एक लंबे समय तक आइवरी कोस्ट के क्षेत्र में तब्लीग़ी दौरे किए। असंख्य शहरों और गांवों में अहमदियत का पौधा लगाया। आप को दस साल तक बिसमे क्षेत्र में बतौर क्षेत्रीय मिशनरी काम करने की भी तैफीक़ मिली। आप ने लगभग एक साल उर्दू ज़बान सीखने के लिए खर्च किया और फिर वफात तक जोला ज़बान में ख़ुत्बा जुम्अ में अनुवाद का काम भी जारी रखा। मरहूम मूसी थे। वहां के मुबल्लिग़ बासित साहिब लिखते हैं कि आप से ख़ाकसार का परिचय 1996 ई में हुआ था। उन्हें पिछले तीस साल से जमाअत की सेवा की तौफ़ीक़ मिल रही थी। 1986 ई के बाद से लेकर अब तक जमाअत से वफादारी, ख़िलाफत से प्यार, इमाम के कलाम से मुहब्बत और अनथक मेहनत उनके स्पष्ट गुण थे। आप ने अपने शौक से उर्दू लिखनी पढ़नी सीखी ताकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरों से सीधा लाभ उठा सकें। इसके लिए दो बार कादियान भी गए ताकि उर्दू सीख सकें। वापस आकर बड़े शौक से पुस्तकों का अध्ययन किया करते थे। इस संबंध में मुरब्बी साहिब कहते हैं कि मेरे साथ अक्सर टेलीफोन पर संपर्क होता था। विभिन्न मुहावरों और कठिन शब्दों के बारे में पूछते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मनज़ूम कलाम भी बड़े शौक और मुहब्बत की भावना से पढ़ते थे और अनुवाद जानने की भी कोशिश करते थे। अल्लाह तआला ने उन्हें ख़ुश अलहानी (अच्छी आवाज़) दी थी। कहते हैं एक बार एक सफर के दौरान उन्होंने मुझ से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फारसी नज़्म सीखने की फरमाइश की। कहते हैं मैंने उन्हें " जानो-दिलम फिदाए जमाले मुहम्मदस्त।" के लगभग पांच शेर तरन्नुम के साथ सिखाए। अत: जब हम गांव में पहुंचे जहां दौरे पर जा रहे थे तो वहां जलसा में उन्होंने वह शेर तरन्नुम से सुनाए और फिर जोला ज़बान में उन्हें अनुवाद भी किया। इस्लाम अहमदियत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इमाम महदी के ज़हूर के बारे में अरबी, जोला और फ्रेंच भाषा में असंख्य नज़्में ख़ुद उन्होंने रचना कीं और ख़ुद ही तरन्नुम से पढ़ते भी थे जो कि लोगों में बेहद लोकप्रिय हुईं।

2003 ई में हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे की वफात के बाद उत्तरी क्षेत्र में जो विद्रोहियों के नियंत्रण में था और व्यावहारिक रूप से देश से कटा हुआ था। वहां जमाअत के विरोधियों ने यह झूठा प्रचार शुरू कर दिया कि इनके ख़लीफा की मौत हो गई है और इस के बाद अब जमाअत ख़त्म हो गई है जिस से क्षेत्र के अहमदियों में बेचैनी फैल गई। जब यह खबर केंद्र में पहुंची तो कासिम तोरे साहिब को इस झूठे प्रचार को ख़त्म करने के लिए भेजा गया। इन दिनों में उत्तरी क्षेत्र का सफर बहुत मुश्किल था लेकिन कासिम साहिब बस पर ट्रैक्टर ट्राली पर, बाइक पर, गधा गाड़ी पर पैदल यात्रा करते कराते जंगलों से गुज़रते हुए इन जमाअतों में पहुंचे इस क्षेत्र में वहां दोबारा तब्लीग़ की और बताया कि ख़िलाफत का निज़ाम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से स्थापित है तो इससे अहमदियों का मोराल ऊंचा हुआ तो इस सफर के नतीजे में कई जमाअतों में ज़िन्दगी की नई भावना पैदा हुई और इस प्रकार उन्हें झूठे प्रचार को ख़त्म करने की तौफीक़ मिली। तब्लीग़ के लिए आप अक्सर एक महीने के लगातार दौरे करते थे और बड़ी मेहनत करने वाले थे। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे और उनकी नस्लों को भी जमाअत के साथ वफ़ा का संबंध रखने की ताकत प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

## इन भविष्यवाणियों को अपने संदूकूं में सुरक्षित रख लो कि यह ख़ुदा का कलाम है जो एक दिन पूरा होगा।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1906 ई. में अल्लाह तआला की वह्यी( ईशवाणी) के अनुसार यह भविष्यवाणी फरमाई।

ख़ुदा तआला ने मुझे बार बार ख़बर दी है कि वह मुझे सम्मान देगा
और मेरी मुहब्बत दिलों में बिठाएगा
और मेरे सिलसिले को सारी ज़मीन में फैलाएगा
और सब फिर्कों (सम्प्रदायों ) पर मेरे फिर्का को विजयी करेगा
और मेरे फिर्का के लोग इतना ज्ञान तथा मअरफत में उन्नति हासिल करेंगे
कि वे अपनी सच्चाई के नूर से और अपने दलीलों तथा निशानों के द्वारा सब का मुंह बन्द कर देंगे
और हर क़ौम इस चश्मा से पानी पीएगी
और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा और यहां तक कि ज़मीन पर फैल जाएगा
बहुत सी रोकें पैदा होंगी और परीक्षाएं आएंगी
मगर ख़ुदा सब को बीच से उठा देगा और अपने वादा को पूरा करेगा
अत: हे सुनने वालो ! इन बातों को ख़ूब याद रखो
इन भविष्यवाणियों को अपने सन्दूकों में सुरक्षित रख लो
कि यह ख़ुदा का कलाम है जो एक दिन पूरा होगा।

(तज़करा पृष्ठ 597)

## खाँसी के कुछ घरेलू नुस्ख़े

खाँसी दो प्रकार की होती है। शुष्क एवं गीली, शुष्क खाँसी में बलग़ाम नहीं होती। गीली खाँसी में बलग़ाम निकलता है शुष्क खाँसी अधिक कष्ट पहुँचाती है। खाँसते-खाँसते सिर दर्द से फटने लगता है। इसके लिए एक आसान नुस्ख़ा यह है कि फिटकरी बिरयाँ तीन माशा और चीनी तीन माशा इकट्ठी पीस कर इसकी14 पुड़िया बना लें। यदि खाँसी शुष्क है तो दिन में तीन पुड़िया सुबह, शाम दूध से लें। यदि खाँसी गीली है तो यह पुड़िया पानी से मरीज़ को दें।

**दूसरा नुस्ख़ा :-** हल्दी की गाँठ को तवे पर भून लें फिर उसे बारीक पीस लें। प्रत्येक दिन सुबह, दोपहर, शाम को तीन-तीन माशा पानी के साथ लें।

**तीसरा नुस्ख़ा :-** हल्दी को बारीक पीस कर शुद्ध शहद में मिलाएँ। शहद इतना मिलाएँ कि गोलियां बन सकें। जब खाँसी का दौरा उठे तो एक गोली मुँह में रख कर चूसें। खाँसी न थमे तो एक गोली और मुँह में रख कर चूस लें।

**चौथा नुस्ख़ा :-** यदि खाँसी बहुत अधिक हो तो एक किलो गाय का दूध लें। दुकान से दो तोला नमक साँभर ले कर उस दूध में मिला कर इतना उबालें कि दूध शुष्क हो जाए पीछे नमक रह जाएगा । सुबह के समय यह नमक दो रत्ती चाटें। तीन चार दिनों में खाँसी ठीक हो जाएगी।

**खाँसी से गला बैठ जाने का नुस्ख़ा**

कई बार नज़ला और खाँसी से गला इतना बैठ जाता है कि आवाज़ नहीं निकलती इसके लिए दुकान से चार तोला अमलास लें और उसे आधा किलो दूध में मिला कर उबालें। रोगी को इस के ग़रारे करायें।

**पाँचवां नुस्ख़ा :-** एक माशा नमक मूली लें और उस में छ: माशा चीनी मिला लें। सुबह और शाम थोड़ी मात्रा में गर्म पानी से लें।

**छठा नुस्ख़ा :-** खाँसी के लिए गूँद कीकर एक तोला और पिसी हुई मुलट्ठी दो तोला मिला कर पानी में घोल लें। चार रत्ती की गोलियाँ बनाएँ और सुबह दोपहर शाम एक-एक गोली चूसें।

खाँसी के लिए परहेज़ अत्यधिक ज़रूरी है। सबसे पहले ध्यान रखें कि कब्ज़ न हो। नज़ला और ज़ुकाम के लिए भी यही परहेज़ ज़रूरी है। यदि कब्ज़ महसूस हो तो खाना हल्का कर दें। रात को गुलकन्द दो बड़े चमचे दूध के साथ लें या मुरब्बा हरड़ दो दाने खा लें और बाद में दूध पी लें।

(मासिक 'हिकायत" जनवरी 2006 साभार अलफ़ज़ल इन्टरनेशनल 20 अक्तूबर से 26 अक्तूबर 2006 ई.)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +01-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 10 March 2016 Issue No. 1

MANAGER
NAWAB AHMAD
Tel. : (0091) 1872-224757
Manager : + 01-9417020616
e -mail : managerbadrqnd@gmail.com
SUBSCRIPTION ANNUAL : Rs. 300/-

# शहर की चाबियां

हिजरत के पन्द्रहवें साल उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहो अन्हो ने इस्लामी लश्कर के सिपाह सालार हज़रत अम्र बिन आस, शरजील बिन हुस्ना और अबू उबैदा रज़ियल्लाहो अन्होम को मुकद्दस (पवित्र) ज़मीन के शासकों की ओर रवाना किया ताकि वे शहर की चाबियां इन के हवाले कर दें लेकिन शासक पादरी जाफर वेनोस ने शहर की चाबियाँ उनके हवाले करने से इनकार कर दिया और कहने लगा" हम अपनी धार्मिक किताब में वह गुण पढ़े हैं जिन को धारण करने वाला आदमी इस शहर की चाबी का मालिक बनेगा, लेकिन हम वे गुण तुम्हारे अंदर नहीं पा रहे, इसलिए शहर की चाबियाँ तुम्हारे हवाले नहीं की जा सकतीं।

यह जवाब सुन कर इस्लाम के जरनैलों ने उमर बिन ख़त्ताब अल्फ़ारूक को यह संदेश भेजा कि ए अमीरूल मोमिनीन ! आप खुद आंएँ, क्योंकि मुकद्दस ज़मीन के शासक ने शहर की चाबियाँ हमारे हवाले करने से इंकार कर दिया है और हम नहीं चाहते कि आप की इजाज़त मिले बिना किसी प्रकार की नोंक झोंक करें।

हालात को जानने के बाद उमर बिन खत्ताब अपने ग़ुलाम के साथ सफर पर रवाना हो गए। रास्ते में बारी बारी कभी ख़ुद सवार होते और कभी ग़ुलाम को सवारी के जानवर पर बिठाते, और कभी दोनों पैदल चलने लगते कि सवारी का जानवर थकावट से आराम पा ले।

सफर के दौरान सीरिया की सीमा के नज़दीकी पहुंचे तो रास्ते में दूर दूर तक कीचड़ था। उन के पास कोई चारा नहीं था कि इस कीचड़ को पैदल पार करते।

इमाम हाकिम, तारिक बिन शहाबुद्दीन रज़ि अल्लाह से रिवायत करते हैं कि सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाह सीरिया से रवाना हुए। इधर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि थे जो कीचड़ नुमा समुद्री रास्ते पर अमीरुल मोमिनीन के स्वागत के किए आए थे। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अपनी ऊँटनी पर सवार थे। जब इस कीचड़ नुमा समुद्री मार्ग रास्ते में था तो आप ऊंट से उतरे अपने जूते निकाल कंधे पर रखे और ऊंट की लगाम अपने हाथ में थामी, फिर ऊँटनी को पकड़े हुए कीचड़ नुमा समुद्री रास्ते पर ख़ुद को डाल दिया।

हज़रत अबू उबैदा रज़ि ने यह देखकर निवेदन किया अमीरूल मोमिनीन ! आप यह क्या कर रहे हैं ? जूते कंधे पर, सवारी की नकेल हाथ में और ऊँटनी के साथ इस कीचड़ जैसी ज़मीन में ? मुझे अच्छा नहीं लग रहा है, क्योंकि सीरिया के लोगों से आपका सामना होने वाला है।

उमर बिन खत्ताब अल्फ़ारूक रज़ि ने यह सुनकर फरमाया,

"आह, हे अबू उबैदा यदि आप के अतिरिक्त किसी और ने ऐसा कहा होता तो मैं उसे उम्मते मुहम्मद के लिए इबरत का निशान बनाता ! हम ज़लील लोग थे तो अल्लाह तआला ने इस्लाम के माध्यम से हमें सम्मान तथा शान से सम्मानित किया, अब अगर हम इस्लाम को छोड़कर किसी और माध्यम से सम्मान तथा शान चाहने लगेंगे तो अल्लाह तआला हमें फिर ज़लील (अपमानित) कर देगा"।

(अल मुस्तदरिक हाकिम (62,61 / 1))

फिर उमर बिन ख़त्ताब रज़ि सवारी पर बैठे और थोड़ी दूर जाकर अपनी बारी ख़त्म होते ही उतर गए और ग़ुलाम सवार हो गए। इस्लामी लश्कर की इच्छा थी कि जब वह फिलिस्तीन के शासक के पास पहुंचे तो उस समय सवारी की बारी उमर रज़ि अल्लाह की हो लेकिन परिणाम इसके विपरीत निकला और यात्रा के अंतिम भाग में सवारी की बारी ग़ुलाम की आ पड़ी, इसलिए गुलाम सवार होकर और अमीरुल मोमिनीन ने पैदल चल कर अंतिम मंजिल तय की।

जब यह मुबारक काफिला पवित्र ज़मीन फिलिस्तीन के शासक के दरबार में पहुंचा तो उस ने उमर रज़ि के कपड़े बड़े ग़ौर से देखे और बहुत आराम से शहर की चाबियाँ उनके हवाले कर दीं, तो उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहो अन्हो से सम्बोधित होकर कहने लगा

" हाँ आप ही वह आदमी हो, जिस की विशेषताएं हम ने अपनी पवित्र किताबों में पढ़ी हैं, हमारी पवित्र किताबों में लिखा है कि वह आदमी जो पवित्र भूमि फिलिस्तीन की चाबी का मालिक होगा, इस देश में पैदल प्रवेश करेगा जबकि उसका ग़ुलाम सवार होगा और उसके कपड़ों में सत्रह रफू लगे हुए होंगे।"

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहो अन्हो ने जब चाबी को अपने हाथ में लिया तो सजदे में गिर गए और काफी देर तक रोते रहे। आप रोने का कारण पूछा गया तो कहा :.

" मैं इसलिए रो रहा हूँ क्योंकि मुझे डर है कि दुनिया तुम्हारे लिए अपने आप झुक जाएगी तुम एक दूसरे को अजनबी समझने लगोगे (तुम्हारे अंदर से इस्लामी भाईचारा व मुहब्बत ख़त्म हो जाएगा) उस वक्त आसमान वाले भी तुम्हारी अनदेखी कर देंगे।"

(सुनहरे पन्ने, पेज 291 अब्दुल मालिक मुजाहिद)

☆ ☆ ☆

# ख़ुश ख़बरी

## अख़बार बदर का राष्ट्र भाषा एवं प्रान्तीय भाषाओं में आरम्भ

जमाअत के लोगों को जान कर यह ख़ुशी होगी कि सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी से अब कादियान दारुल अमान से हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना 1902 ई का जारी किया गया, अख़बार बदर उर्दू अब भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी के अतिरिक्त 5 प्रन्तीय भाषाओं(बंगला, उड़िया, तमिल, तेलगू, एवं मलयालम) में प्रकाशित होना शुरू हो चुका है। इस से पहले यह अख़बार सर्कुलर की शक्ल में मार्च 2014 ई से प्रकाशित हो रहा था। अब अल्लाह तआला के फज़ल से इस की रजिस्ट्रेशन की मंज़ूरी मिल चुकी है। इस मंज़ूरी के बाद इन भाषाओं में पहला अंक 10 मार्च 2016 ई से नियमित रूप से प्रकाशित होना शुरू हो गिया है।

पिछले कुछ महीनों से सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने जमाअत के लोगों को तरबियत के सिलसिले में चार प्रमुख बिन्दुओं पर आधारित हिदायत फरमाई है। जिस में हिदायत (4) अख़बार बदर के प्रकाशन के विस्तार के बारे में है। जिस में हिदायत है कि

" भारत की जमाअत के लोगों की तरबियत के लिए जमाअत के अख़बार साप्ताहिक बदर उर्दू के अतिरिक्त हिन्दी और कई प्रान्तीय भाषाओं में भी इस के संस्करण शुरू किए गए हैं। इन सारे संस्करणों से जमाअत के लोग कितना लाभ उठा रहे हैं इस की भी समीक्षा ली जाए और कोशिश की जाए कि हर घर में इस तारीख़ी अख़बार का एक पर्चा ज़रूर जाए"(WWT/8420/12/8/2015)

इस अख़बार में नीचे लिखे कालम होंगे।

दर्से-कुरआन, दर्से-हदीस, मल्फूज़ात हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ,ताज़ा ख़ुत्बा सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़, दौरा जात हुज़ूर अनवर की रिपोर्टें, धार्मिक तथा ज्ञान बढ़ाने वाले मज़मून, जमाअत के एलान तथा रिपोर्टें तथा दूसरे दिलचस्प कालम इत्यादि।

सारे ज़िलों के अमीर साहिबान/ जमाअत के सदर साहिबान/ मुबल्लग़ीन तथा मुअल्लमीन किराम और ज़ैली तंज़ीमों के ओहदेदारान ज़िला तथा मुकामी तथा जमाअत के लोगों से दरख़वासत की जाती है कि वे अपने प्यारे इमाम की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए ख़ुद भी इस तारीख़ी अख़बार को, जो हज़रत अकदस मसीह मौऊद के ज़माने का है , और जो अब उन की अपनी भाषाओं में प्रकाशित हो रहा है, न सिर्फ अहमदियों के घरों में लगवाएं बल्कि अपने ग़ैर अहमदी दोस्तों तथा दूसरे परिचित लोगों तक ज़्यादा से ज़्यादा भाइयों को भी लगवाएं।

इसी तरह लेखकों से निवेदन है कि वह अपने ज्ञान वर्धक तथा तरबियती मज़मून भिजवाएं।

(मैनेजर अख़बार बदर कादियान)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian,
Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India.